अध्याय 40

बन्दीगृह में यूसुफ़

यद्यपि सब के साथ अच्छे और बुरे पल होते हैं, ऐसा कम ही होता है कि लोगों को उन ऊँचाइयों और गहराइयों का अनुभव करने को मिलता है जो यूसुफ़ के जीवन का भाग थीं। धनी कुलपति का प्रिय पुत्र होने की परिस्थितियाँ तेज़ी से बदल गईं जब उसके भाइयों ने उसे दासत्व में बेच दिया। फिर अपने स्वामी के घर में सर्वोच्च स्थान पर उसकी उन्नति हो गई, पोतीपर के बाद वह ही था। फिर घटनाओं के फ़िर से पलटने से, यूसुफ़ ने अपने आप को बन्दीगृह में पाया। परमेश्वर ने एक बार फिर उसे इस योग्य किया कि इस बार वह अपने बन्दीगृह के दारोगा और साथी बन्दियों में अपने आप को प्रतिष्ठित कर सके।

फ़िरौन के पदाधिकारी भी बन्दीगृह में (40:1-8)

[1]इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने स्वामी के विरुद्ध कुछ अपराध किया। [2]तब फ़िरौन ने अपने उन दोनों हाकिमों पर, अर्थात पिलानेहारों के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान पर क्रोधित होकर [3]उन्हें कैद करा के अंगरक्षकों के प्रधान के घर के उसी बन्दीगृह में, जहां यूसुफ़ बन्दी था, डलवा दिया। [4]तब अंगरक्षकों के प्रधान ने उनको यूसुफ़ के हाथ सौंपा, और वह उनकी सेवा टहल करने लगा: सो वे कुछ दिन तक बन्दीगृह में रहे। [5]मिस्र के राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा, बन्दीगृह में बन्द थे, उन दोनों ने एक ही रात में, अपने अपने होनहार के अनुसार, स्वपन देखा। [6]सबेरे जब यूसुफ़ उनके पास अन्दर गया, तब उन पर उसने जो दृष्टि की, तो क्या देखता है कि वे उदास हैं। [7]इसलिए उसने फ़िरौन के उन हाकिमों से, जो उसके साथ उसके स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, "आज तुम्हारे मुँह क्यों उदास हैं?" [8]उन्होंने उस से कहा, "हम दोनों ने स्वप्न देखा है, और उनके फल का बताने वाला कोई भी नहीं।" यूसुफ़ ने उनसे कहा, "क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं? मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ।"

आयतें 1, 2. यूसुफ़ के बन्दीगृह में डाले जाने और इस अध्याय की घटनाओं के आरंभ होने के बीच अनकहा समय बीत गया। एक समय पर **दो** नए बन्दी फ़िरौन के महल से आ पहुँचे। लेख **पिलानेहारों के प्रधान** और **पकानेहारों के प्रधान** के विरुद्ध लगे दोषों को तो नहीं बताता है, बस इतना कहता है कि **उन्होंने**

अपने स्वामी मिस्र के राजा, को क्रोधित किया था।

"प्रधान पिलानेहारे" का उत्तरदायित्व था फ़िरौन की मेज़ पर दाखरस उपलब्ध करवाए और "कटोरा [उसके] हाथों में दे" (40:11, 21; देखें 1 राजा 10:5; 2 इतिहास 9:4; नहेम्य. 1:11)। क्योंकि उसे राजा को ज़हर दिए जाने के षड्यंत्रों से रक्षा करनी होती थी, इसलिए उसे समय समय पर परोसने से पहले दाखरस को पीना भी होता था। "प्रधान पकानेहारे" का काम था राजा की मेज़ पर रोटी और अन्य पकाई हुई सामग्री उपलब्ध करवाना (40:16, 17)। इस प्रकार के **हाकिम** "राजा के विश्वासपात्र होते थे और राजनैतिक प्रभाव भी रखते थे।"[1] इसलिए जो भी दोष उन पर लगाए गए वे काफ़ी गंभीर रहे होंगे, क्योंकि **फ़िरौन उनसे क्रोधित था।**

आयत 3. फ़िरौन के इन दोनों महत्वपूर्ण दासों को **अंगरक्षकों के प्रधान के घर के बन्दीगृह में रखा गया।** क्योंकि पोतीपर की पदवी, "अंगरक्षकों का प्रधान" थी, 39:1 में, यह बन्दीगृह संभवतः उसके इलाके में स्थित था। जैसा 39:21, 22 में लिखा गया है, यूसुफ़ को "बन्दीगृह के प्रधान" या "जेल के दारोगा" के सुपुर्द किया गया था।[2] राजा के बन्दियों को **उसी बन्दीगृह में डाला गया** जिसमें यूसुफ़ को डाला गया था। जैसा कि 39:20 में है, इब्रानी वाक्यांश का, जिसे "बन्दीगृह" अनुवाद किया गया है, शब्दार्थ होता है "गोल घर।"

आयत 4. जैसे एक समय पोतीपर ने अपने घर और बाहर का सब कुछ **यूसुफ़ के निरीक्षण में कर दिया** था, वैसे ही यूसुफ़ को फ़िरौन के इन महत्वपूर्ण बन्दियों का निरीक्षक बना दिया गया। यह तथ्य कि **अंगरक्षकों के प्रधान**, पोतीपर ने,[3] राजा के बन्दियों को यूसुफ़ की निगरानी में कर दिया संकेत करता है कि उसे अपनी पत्नी द्वारा उसके विरुद्ध लगाए गए दोष पर सन्देह था। यूसुफ़ अपने उत्तरदायित्व के प्रति विश्वासयोग्य था, और उन बन्दियों की **देखभाल करता** था; और वे एक अनवर्णित समय तक साथ **बन्द रहे।**

आयतें 5, 6. बन्दीगृह में अपने समय के दौरान, **पिलानेहारे और पकानेहारे ... दोनों ही ने एक ही रात को स्वप्न देखा।** स्वप्न मूर्तिपूजक अन्यजाति लोग घबरा जाते थे; उनका मानना था कि उनके देवता स्वप्नों के द्वारा उन्हें आने वाली परिस्थितियों के बारे में सचेत करते हैं। लेकिन, क्योंकि स्वप्नों में पेचीदा संकेतात्मक बातें सम्मिलित होती थीं, और **प्रत्येक स्वप्न** का **अपना ही अर्थ** होता था, स्वप्न देखने वाले अपने स्वप्नों के अर्थ को लेकर असमंजस में ही रहते थे।

इसलिए **सबेरे जब यूसुफ़ उन** दोनों बन्दियों के पास अन्दर गया, तब उन पर उसने **जो दृष्टि की**, तो क्या देखता है, कि **वे उदास** हैं। इब्रानी शब्द זָעַף *(ज़आप)*, जिसका अर्थ है "रोगी" या "जीर्ण" दिखना, का अनुवाद सामान्यतः "उदास" (NASB; NIV), "दुःखी" (KJV; NKJV), "परेशान" (NRSV; ESV), या "विचलित" (TEV; NLT) किया जाता है। इस इब्रानी शब्द का यह कृदंतात्मक रूप केवल उत्पत्ति 40:6 और दानिय्येल 1:10 में ही आता है। इस बाद वाले हवाले में, NRSV में अधिकारी की चिंता को दिखाया गया है कि दानिय्येल और उसके मित्र अन्य लोगों की तुलना में "कमज़ोर स्थिति" में न दिखाई दें। रोगी

प्रतीत होने का विचार उत्पत्ति 40:6 के संदर्भ के साथ अच्छा मेल खाता है।[4]

आयतें 7, 8. स्वाभाविक था कि यूसुफ़ **फ़िरौन के हाकिमों** की परेशान स्थिति से चिंतित हुआ जो उसके साथ बन्दीगृह में थे और उसके निरीक्षण में थे; इसलिए उसने उन से पूछा, **"आज तुम्हारे मुँह क्यों उदास हैं?"** उनके मनों में प्राथमिक समस्या उनका स्वप्न नहीं, वरन स्वप्न का अर्थ बताने वाले का अभाव था। उन्होंने उत्तर दिया, **"हम दोनों ने स्वप्न देखा है, और उनके फल का बताने वाला [פֹּתֵר,** *पत्थर]* **कोई भी नहीं।"** प्राचीन निकट पूर्व में, स्वप्नों का अर्थ बताने वालों की शिक्षण शाखा होती थी, और इस विषय पर पुस्तकें लिखी गईं थीं। राजाओं के पास सामान्यतः अनेकों प्रकार के प्रशिक्षित विशेषज्ञ सलाहकार, जादूगर, तांत्रिक, ओझा होते थे जो रहस्यमय स्वप्नों के अर्थ बता सकें (दानिय्येल 2:1, 2)। वे यह भी मानते थे कि जादू के प्रयोग द्वारा, जो कुशलता से अर्थ बता सकता है वह अच्छे स्वप्न भी उत्प्रेरित कर सकता है।[5]

क्योंकि ये हाकिम तब बन्दी थे, फ़िरौन के दरबार से अलग हो गए थे, इसलिए अपने स्वप्नों के अर्थ जानने के लिए सहायता लेने में असमर्थ थे। इसलिए यूसुफ़ ने उन से कहा, **"क्या स्वपनों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं?"** (देखें दानिय्येल 2:27, 28)। उसने फिर आगे कहा, "**मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ।**" एक निम्न स्तर के विदेशी दास द्वारा किया गया यह बड़ा दावा था। इन बन्दियों ने कभी अपने किसी साथी बन्दी से उसके स्वप्न के बारे में पूछने का विचार भी नहीं किया होगा। लेकिन यूसुफ़ ने एक तीखी तुलना भी उनके सामने रखी: उसने संकेत किया कि स्वप्नों का अर्थ बताना न तो कोई मानवीय कौशल है और न ही कोई मनुष्य इसे सीख सकता है। इसके विपरीत यह परमेश्वर से, मिलने वाला वरदान है, जो भविष्य की घटनाओं को निर्धारित करने तथा मनुष्यों को स्वप्नों का सही अर्थ बताने के लिए सक्षम करने वाला एकमात्र है।

पिलानेहारे का स्वप्न और यूसुफ़ द्वारा उसका अर्थ बताया जाना (40:9-15)

9तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वपन यूसुफ़ को यों बताने लगा: "मैंने स्वपन में देखा, कि मेरे सामने एक दाखलता है; 10और उस दाखलता में तीन डालियां हैं: और उसमें मानो कलियां लगी हैं, और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाख लगकर पक गई। 11फ़िरौन का कटोरा मेरे हाथ में था; और मैंने उन दाखों को लेकर फ़िरौन के कटोरे में निचोड़ा, और कटोरे को फ़िरौन के हाथ में दिया।" 12तब यूसुफ़ ने उस से कहा, "इसका फल यह है; कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है; 13इसलिए अब से तीन दिन के भीतर तेरा सर ऊँचा करेगा, और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा, और तू पहले की समान फ़िरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा।" 14अतः जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा कर के फ़िरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से मुझे छुड़वा देना। 15क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से

मुझे चुरा कर लाया गया है; और यहां भी मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊं।

आयतें 9-11. पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ़ को बताने लगा। उसने अपने सामने दाखलता देखी (40:9) जिसमें तीन डालियाँ थीं। इस स्वप्न में ध्यान देने योग्य बात थी कि बहुत शीघ्रता से बढ़ोतरी के तीनों चरण पूरे हुए: **उसमें कलियाँ लगीं, और वे फूलीं, और उसके गुच्छों में दाख लगकर पक गई** (40:10)। इसके बाद की तीनों घटनाएं भी शीघ्रता से एक के बाद एक पूरी हुईं। क्योंकि फ़िरौन का कटोरा [उसके] हाथ में था, पिलानेहारों के प्रधान ने **दाखों को लेकर फ़िरौन के कटोरे में निचोड़ा**, और **कटोरे को फ़िरौन के हाथों में दिया** (40:11)। स्वप्न में न तो दाख को पकने का समय दिया गया और न ही दाखरस को फ़िरौन को देने से पहले उसे खमीर होने दिया गया। इसलिए, घटनाएं जो सामान्यतः काफ़ी समय लेती हैं वे सिकुड़ कर स्वप्न में एक ही घटना बन गईं।

आयतें 12, 13. यूसुफ़ द्वारा स्वप्न का अर्थ भी शीघ्रता से ही आया। उसे विचारने, मनन करने या उसके बारे में प्रार्थना करने में समय नहीं लगाना पड़ा। यह परमेश्वर के साथ उसके निकट संबंध का प्रमाण हो सकता है, जिसने पद 8 के अनुसार उसे जानकारी दी। यूसुफ़ ने तुरंत ही यह अर्थ बताया: **"तीन डालियों का अर्थ तीन दिन हैं; इसलिए अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सर ऊँचा करेगा और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा।"**

तीन दिन की समय सीमा पिलानेहारों के प्रधान के लिए यूसुफ़ द्वारा बताए गए स्वप्न के अर्थ को जाँचने के लिए पर्याप्त था। क्या इस इब्री में स्वप्नों का अर्थ बताने की योग्यता थी? वाक्यांश "तेरा सर ऊँचा करेगा" को यहाँ इस कथन के प्रतीकात्मक रूप में देखना चाहिए कि: "फ़िरौन तुझे क्षमा करेगा और तुझे अपने पद पर पुनःस्थापित कर देगा" (NJPSV; देखें NEB)। दूसरे संदर्भों में, यह अभिव्यक्ति परमेश्वर द्वारा भजनकार के सर को ऊँचा उठा कर उसे आशीषित करने और उसकी प्रार्थना का उत्तर देने के लिए भी प्रयुक्त हुई है (भजन 3:3; 27:6)। 2 राजा 25:27, में इसी इब्रानी अभिव्यक्ति का प्रयोग बेबीलोन के राजा के लिए किया गया है जिसने राजा यहोयाकीन को बेबीलोन की बन्धुवाई के समय में बन्दीगृह से निकाला। इस घटना में, यूसुफ़ पिलानेहारे को आश्वस्त कर रहा था कि वह शीघ्र ही अपने पद की प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर लेगा और एक बार फिर **फ़िरौन के कटोरे को उसके हाथ में देने के लिए** विश्वासयोग्य स्वीकार कर लिया जाएगा।

आयत 14. यूसुफ़ अपने बताए अर्थ को लेकर निश्चित था, और उसने पिलाने हारे से अनुरोध किया कि जब फ़िरौन उसे पुनः उसकी राजकीय सेवकाई में नियुक्त करे तो वह उसे न भूले। उसने अनुरोध किया, **अतः जब तेरा भला हो जाए, तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके** [חֶסֶד, *चेसड*] **फ़िरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से मुझे छुड़वा देना।** "इस घर" का तात्पर्य उस बन्दीगृह से था जिसमें यूसुफ़ और वे दोनों हाकिम कैद किए गए थे (देखें 40:3)।

आयत 15. यूसुफ़ ने पिलानेहारे को उत्तरदायित्व दिया कि उसके लिए फ़िरौन से चर्चा करे, परन्तु यह केवल उसका ऋण चुकाने के लिए नहीं था। यूसुफ़ ने अपने निर्दोष होने पर ज़ोर दिया, और कहा कि उसका बन्दीगृह में डाला जाना अन्याय था। वस्तुतः, उसने कहा कि **इब्रानियों के देश** - अर्थात, कनान देश से उसका **अपहरण** हुआ (גָּנַב, *गानब)* या "चुराया" (KJV)। यद्यपि यूसुफ़ का अपहरण इश्माएलियों ने नहीं किया था, यह कथन यूसुफ़ के भाइयों द्वारा उसकी स्वतंत्रता चुराने और उसे दासत्व में बेचने के अनुभव (37:25-28) की सजीव अभिव्यक्ति है।

कुछ व्याख्याकर्ताओं का विचार है कि "इब्रानियों का देश" काल-भ्रम है क्योंकि यह वाक्यांश बाद में विभाजित राज्य के काल में आया (देखें यिर्म. 34:9, 14; योना 1:9)। लेकिन, शब्द "इब्री" पुराने नियम में उस समय से बहुत पहले से प्रयुक्त हुआ है, अब्राहम (14:13), यूसुफ़ (39:14, 17), और मूसा के समय के इस्राएलियों (निर्गमन 1:15, 16; 21:2) के संदर्भ में। परमेश्वर के लोगों को शाऊल के समय में भी "इब्री" कहा जाता था (1 शमूएल 13:3, 7, 19)।

यूसुफ़ ने ज़ोर देकर कहा कि, मिस्र में रहते हुए भी, उसने **कोई ऐसा काम नहीं किया,** जिसके कारण वह **इस कारागार में** डाला जाता। जिस शब्द का अनुवाद "कारागार" (בּוֹר, *बोर)* किया गया है उसका अनुवाद "गढ़हा" या "कुण्ड" भी हो सकता है। कुछ का मानना है कि यह अतिशयोक्ति है, उस अभिव्यक्ति को दिखाने के लिए जब यूसुफ़ को उसके भाइयों ने गढ़हे में डाला था (37:24)। यद्यपि यह संभव है, यह भी स्पष्ट है कि गढ़हे या कुण्ड से बहुत अच्छे कारागार, या बन्दीगृह बनते थे (निर्गमन 12:29; यशा. 24:22; यिर्म. 38:6-13)। जौन ई. हार्टले के अनुसार, यूसुफ़ ने "विलाप किया कि उसे कनान के एक 'गढ़हे' से निकालकर मिस्र के दूसरे 'गढ़हे' में डाल दिया गया है।"[6]

पकानेहारे का स्वप्न और यूसुफ़ द्वारा उसका अर्थ बताया जाना (40:16-19)

16यह देखकर, कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ़ से कहा, "मैंने भी स्वप्न देखा है, वह यह है: मैंने देखा, कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की तीन टोकरियां हैं; 17और ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिए सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं; और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं।" 18यूसुफ़ ने कहा, "इसका फल यह है; तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। 19अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा, और पक्षी तेरे मांस को नोच नोच कर खाएंगे।"

आयतें 16, 17. यूसुफ़ द्वारा प्रधान पिलानेहारे के स्वप्न का अच्छा अर्थ बताए जाने से उत्साहित होकर प्रधान पकानेहारे ने उस जवान बन्दी को अपना स्वप्न बताया, इस आशा से कि उसे भी अच्छा अर्थ प्राप्त होगा। उसने आरंभ

किया, **"मैंने देखा, कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की तीन टोकरियां हैं।"** यद्यपि NASB "सफ़ेद रोटी की टोकरियाँ" कहती है, अन्य अनुवादों में भिन्न लेख पाए जाते हैं। इब्रानी शब्द חֹרִי *(चोरी)* का अर्थ अनिश्चित है, क्योंकि यह केवल पुराने नियम में ही आया है। इसे KJV ने "सफ़ेद टोकरियाँ" कहा है, जबकि NAB ने "बेंत की टोकरियाँ" कहा है। इसे NRSV में "केक की टोकरियाँ" कहा गया है, तो NLT में "सफ़ेद पेस्ट्रियों की टोकरियाँ" कहा गया है।

अपने स्वप्न के बारे में आगे बताते हुए, पकानेहारे ने कहा, **"ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिए सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं।"** प्रतीत होता है कि पकी पकाई भोजन वस्तुएं, इतिहास के पुराने समय में भी मिस्रियों को पसंद थीं। चित्र लिपि में लिखे गए मिस्र के एक शब्दकोष में अड़तीस प्रकार के केक तथा सत्तावन प्रकार की रोटी दी गईं हैं।[7] पकानेहारे के स्वप्न का परेशान करने वाला भाग उन **पक्षियों** को उड़ा नहीं पाना था (देखें 15:11)। वे [उसके] **सिर पर रखी टोकरी में से स्वादिष्ट रोटियों को खा रहे थे।**

आयतें 18, 19. बिना किसी हिचकिचाहट के, जो अनिश्चितता का संकेत होती, पकानेहारे को **यूसुफ़ ने उत्तर** के रूप में अपने स्वप्न का **अर्थ** बता दिया। लेकिन, उसने बुरे समाचार को अन्त के लिए छोड़ दिया, और पकानेहारे के स्वप्न का वैसा ही अर्थ बताया जैसा कि उसने आरंभ में पिलानेहारे के स्वप्न का बताया था। उसने कहा कि **तीन टोकरियाँ**, 40:10 की तीन डालियों के समान **तीन दिन** दिखाती हैं। फिर उसके अर्थ का भाव गंभीर हो गया और उसने प्रकट किया कि, "अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा, और पक्षी तेरे मांस को नोच नोच कर खाएंगे।"

यह मृत्युदण्ड किस प्रकार दिया जाना था? संभव है कि "तेरा सिर उठाएगा" यूसुफ़ के द्वारा वैसे ही शब्दों का संकेतात्मक प्रयोग है जैसे उसने पिलानेहारे से कहे थे (40:13)। यदि यह सत्य है तो, पिलानेहारे का सिर प्रशंसा के साथ ऊँचा उठाया जाना था, जबकि खिलानेहारा का सिर अपमानित कर के फांसी के साथ उठाया जाना था (देखें 40:20-22)। यहाँ NEB बस इतना ही कहती है, "फ़िरौन तुझे उठाकर पेड़ पर टंगवा देगा।" यहाँ पर मृत्यु की विधि अनकही है, यदि वह फाँसी नहीं थी तो।

फिर भी, यद्यपि अवश्य ही यहाँ शब्दों का आलंकारिक प्रयोग हुआ है, वाक्यांश "तुझ पर से तेरा सिर उठवा देगा" का सटीक संकेत सिर कटवा कर मृत्यु देना है। यह विचार अनेक अनुवादों में आया है: "तेरा सिर उठवाएगा - तुझ पर से!" (NRSV; ESV), "तेरा सिर उठवाएगा" (NIV; NJPSV), "तेरा सिर कटवाएगा" (CEV; NCV), और "कंधों पर से तेरा सिर उठवा देगा" (REB)। सिर कटवाने के बाद पकानेहारे का शरीर खंबे पर टाँगने के द्वारा और भी अपमानित किया जाएगा (NRSV; NLT) - अर्थात, "खंबे पर बाँध कर टांगा जाएगा" (NAB)।[8] कुछ व्याख्याकर्ता यह अर्थ लगाए जाने से असहमत हैं, क्योंकि फाँसी और सिर कटवाना परस्पर ऐसी विधियाँ हैं जो आपस में मेल नहीं खातीं।[9] फिर भी, राजा शाऊल का उदाहरण दिखाता है कि सिर काटने के

पश्चात लटका देने की संभावना है।[10]

वे चाहे जैसे भी मारे जाएं, मारे गए अपराधियों को दूसरों को चेतावनी देने के लिए बहुधा लटका दिया जाता था जिस से कि जघन्य अपराध करने वाले अपने संभावित परिणाम के प्रति सचेत हों (व्यव. 21:22, 23; यहोशू 8:29; 10:26; 2 शमूएल 4:12)। उनके शरीर उघाड़े कर दिए जाते थे, और उनका **माँस पक्षियों** या जंगली जानवरों द्वारा खा लिया जाता था (देखें 2 शमूएल 21:10)। पकानेहारे के माँस को "पक्षियों" ने वैसे ही खाएंगे जैसे उसके स्वप्न में उसके सिर पर रखी टोकरी में से उन्होंने खाया था (40:17)। क्योंकि मिस्री मृत्योप्रांत शरीर को सुरक्षित कर के रखने को बहुत महत्व देते थे (देखें 50:2, 26), इसलिए एक छिदी हुई, सड़ती लाश जिसे पक्षी खाएंगे, सोचना ही घृणित होगा।[11]

स्वप्नों का पूरा होना (40:20-23)

[20]और तीसरे दिन फ़िरौन का जन्मदिन था, उसने अपने सब कर्मचारियों की जेवनार की, और उसने पिलानेहारों के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया। [21]और पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया, और वह फ़िरौन के हाथ में कटोरा देने लगा। [22]पर पकानेहारों के प्रधान को उस ने टंगवा दिया, जैसा कि यूसुफ़ ने उनके स्वप्नों का फल उनसे कहा था। [23]फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ़ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया।

आयत 20. यह अन्तिम परिच्छेद दिखाता है कि परमेश्वर ने यूसुफ़ को भविष्यज्ञान की ऐसी प्रेरणा प्रदान की थी जो किसी भी स्वाभाविक योग्यता से संभव नहीं थी। यूसुफ़ द्वारा अर्थ बताए जाने के बाद का तीसरा दिन (देखें 40:12, 13, 18, 19) फ़िरौन के जन्मदिन मनाने का विशेष दिन था। उसे राष्ट्रीय अवकाश माना जाता था, और उस दिन सभी राजकीय कार्य निलंबित रहते थे तथा लोग उत्सव में सम्मिलित होते थे। फ़िरौन भोज (מִשְׁתֶּה, *मिश्थेह*, "पीने का भोज"[12]) आयोजित करता था और **अपने सभी सेवकों** (राजकीय अधिकारियों) को निमंत्रित करता था। **उस दिन उसने पिलानेहारों के प्रधान और खिलानेहारों के प्रधान के सिरों** को यूसुफ़ द्वारा भविष्यवाणी की गई तुलनात्मक रीतियों से **उठवा दिया**।

आयतें 21, 22. उसने **पिलानेहारे** को क्षमा कर के उसे वापस उसके स्थान पर पुनःस्थापित कर दिया। यह क्रिया दिखाती थी कि वह सेवक अभी भी उसके कटोरे को चखने के लिए विश्वासयोग्य था, जिससे प्रमाणित हो सके कि उसमें विष नहीं है, और फिर उसे फ़िरौन के हाथों में दिया जाए। लेकिन, प्रधान खिलानेहारा फ़िरौन के विरुद्ध गंभीर अपराध का दोषी पाया गया; इसलिए राजा ने आज्ञा देकर उसे टंगवा दिया। ये घटनाएं वैसे ही घटित हुईं जैसे यूसुफ़ ने

स्वप्न के अर्थ बताते समय कहीं थीं।

आयत 23. प्रधान पिलानेहारे से **यूसुफ़** द्वारा बोले गए प्रोत्साहन के शब्दों के बावजूद, इस पुराने बन्दी ने उसे या सहायता के लिए उसकी विनती को **स्मरण नहीं रखा**। इसके विपरीत, वह उसे भूल गया और फ़िरौन से अपने स्वप्न का अर्थ बताए जाने का उल्लेख भी नहीं किया। यूसुफ़ उसी आशाहीन स्थिति में जहाँ फ़िरौन के सेवक उससे मिले थे, घोर निराशा में पड़ा रह गया, उसी बन्दीगृह में जिसमें उसे अन्यायपूर्वक पोतीपर की पत्नी के बलात्कार के झूठे आरोप में बन्दी बनाया गया था। यूसुफ़ को, मानो भुला दिया गया हो, उसे और दो वर्ष (41:1) बन्दीगृह में ही दुःख में दिन काटने पड़ें।

अनुप्रयोग

थामे रहना सीखना (अध्याय 40)

यूसुफ़ अपनी बन्धुआई की कठिनाइयों को झेलते हुए अपने विश्वास में परिपक्व हो रहा था (अध्याय 39)। उसका विश्वास और सत्यनिष्ठा बन्दीगृह में भी बने रहे।

परमेश्वर के लोग कई बार अपने आप को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं जिनमें उन्हें दोष निवारण के लिए विश्वास सहित प्रतीक्षा करनी पड़ती है। पोतीपर यूसुफ़ पर विश्वास करता था, उसने अपने घर और संपदा को - केवल एक अपवाद, अपनी पत्नी, को छोड़कर, पूर्णतः उसके नियंत्रण में कर दिया था। जब उसने उसे अपने वश में करना चाहा, यूसुफ़ ने उसके आगे समर्पित होने से इनकार कर दिया क्योंकि यह करना उसके स्वामी द्वारा उसमें दर्शाए गए विश्वास का विश्वासघात होता, और परमेश्वर के विरुद्ध पाप। यूसुफ़ की विश्वासयोग्यता के बाद भी, और संभवतः अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए, पोतीपर ने उसे बन्दीगृह में डाल दिया। उन परिस्थितियों में भी परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था, और वहाँ भी उसे "सफ़ल" किया यहाँ तक कि उसे शेष बन्दियों के ऊपर नियंत्रण करने वाला बना दिया गया (39:21-23)। लेकिन फिर भी वह बन्दी बनकर अधीनता में रहा, और "परमेश्वर का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा" (भजन 105:19)। इस प्रकार से परखा जाना कठिन होता है, लेकिन इसके द्वारा यूसुफ़ में आत्मिक बल विकसित हुआ (देखें याकूब 1:2-4, 12; 1 पतरस 1:6, 7)।

लेख यह नहीं बताता है कि राजा प्रधान पिलानेहारे और पकानेहारे से इतना क्रोधित क्यों था, परन्तु यह संकेत देता है कि उन पर राजद्रोह का सन्देह था। जब इन दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों को बन्दीगृह में डाला गया, तो वे भी यूसुफ़ के नियंत्रण में आ गए, और गुप्त समय तक "उसने उनकी देखभाल की" (40:4)। उसे इससे उनका विश्वासपात्र बनने का अवसर मिला और वे अपने स्वप्न उसके साथ बाँट सके। परमेश्वर का कार्य अदृश्य रूप से सर्वथा अनेपक्षित तथा अनचाहे स्थान - एक बन्दीगृह में - परदे के पीछे चल रहा था-यूसुफ़ को मिस्र में

शासनाधिकार में लाए। इस प्रकार से अब्राहम के वंशजों के लिए एक स्थान उपलब्ध करवाया जाना था जिसमें वे रहें और बढ़ें जब तक कि मूसा की अगुवाई में वाचा किए हुए देश जाने का उनका समय न हो जाए।

निश्चय ही, यूसुफ़ इसमें से कुछ भी समझ नहीं पाया था। जो आशीषें परमेश्वर ने उसके लिए रख छोड़ीं थीं, वह उन्हें देख पाने में असमर्थ था और यह भी नहीं समझ पा रहा था कि उसे वह अनाकर्षक बन्दीगृह क्यों झेलना पड़ रहा है। कोई कमतर व्यक्ति, यह मान कर कि, "क्या लाभ है? परमेश्वर को कोई परवाह नहीं है, नहीं तो वह मुझे यहाँ से निकलवा लेता," आशा छोड़ देता। किंतु यूसुफ़ ने न तो निन्दा की और न ही उसके अन्दर कड़वाहट आई; वरन उसे विश्वास था कि परमेश्वर की उसके जीवन के लिए कोई योजना है। एक प्रकार से, यूसुफ़ की परिस्थिति बाद के यहूदी दासों के समान थी जिन्हें जबरन अपने देश से दूर ले जाकर मेसोपोटामी तराई में बन्दी बना कर रख दिया गया (देखें यशा. 42:22)। उन बन्दियों को यशायाह द्वारा दिया गया सन्देश मिस्र में यूसुफ़ के लिए भी प्रासंगिक होता। यद्यपि उसने कभी भविष्यद्वक्ता के शब्द तो नहीं सुने थे, परन्तु कुछ सीमा तक उसका भी विश्वास था कि "जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे" (यशा. 40:31)।

परमेश्वर के लोगों को प्रत्येक अवसर को अपना विश्वास प्रगट करने के लिए प्रयोग करना चाहिए, चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन अथवा विकट क्यों न प्रतीत हो। यूसुफ़ के पास एक अवसर आया जब उसे सौंपे गए बन्दियों में से दो ने एक ही रात में स्वप्न देखे और अगली प्रातः "उदास" दिखाई दिए (40:6)। जब उसने उन से पूछा कि वे इतने उदास क्यों हैं, तो उनका उत्तर था कि उनके स्वप्न का अर्थ बताने वाला कोई नहीं था। वे फ़िरौन के दरबार में उपलब्ध उन ज्ञानियों, जादूगरों तथा तांत्रिकों के साथ, जो स्वप्नों का अर्थ बताने के विशेषज्ञ थे, अपना संपर्क खो चुके थे।

यूसुफ़ के लिए, स्वप्नों का सच्चा अर्थ बताने वाले उस एकमात्र परमेश्वर में अपने विश्वास को व्यक्त करने का उपयुक्त अवसर था। उसने यह कह कर कि परमेश्वर उनका अर्थ बताएगा, उन पुरुषों को प्रोत्साहित किया कि वे उसे अपने स्वप्न बताएं। अपना स्वप्न पहले पिलानेहारा ने बताया, और यूसुफ़ ने उसका अनुकूल अर्थ बताया। साथ ही एक व्यक्तिगत अनुरोध भी किया, कि जब वह अपने पूर्व स्थान पर पुनःस्थापित हो जाए, तो पिलानेहारा उसके प्रति कृपा दिखाते हुए फ़िरौन से यूसुफ़ द्वारा स्वप्न का सही अर्थ बताए जाने की बात कहे। क्योंकि पहला अर्थ अनुकूल था, खिलानेहारा भी अपने स्वप्न को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित हुआ। उसके स्वप्न का अर्थ नाश कर देने वाला था: फ़िरौन उसका "सिर उठवा देगा" और उसे पेड़ पर टंगवा देगा।

मिस्र के बन्दीगृह में अपनी कठिन परिस्थितियों भी, यूसुफ़ परमेश्वर में अपना विश्वास प्रदर्शित कर रहा था; परन्तु उसके प्रयासों का परिणाम उसके लिए निराशाजनक था। प्रधान पिलानेहारे ने यूसुफ़ के बारे में फ़िरौन से कुछ नहीं कहा, वरन उसे बिलकुल भुला दिया (40:23)।

हम यह नहीं जान सकते कि इस समय यूसुफ़ के मस्तिष्क में क्या चल रहा होगा। उसने दास बन कर तथा बन्दी होकर रहना लगभग ग्यारह वर्ष तक सहन किया था,[13] और निःसन्देह वह बेचैन था कि प्रभु मिस्र में बन्धुआई से उसे स्वतंत्र करे।

अपनी मानसिक व्यथा में, संभवतः उसने अपने परदादा अब्राहम के बारे में स्मरण किया होगा कि वे सौ वर्ष के थे जब, वाचा की सन्तान, इसहाक का जन्म हुआ। हो सकता है कि उसने अपने दादा इसहाक पर भी विचार किया हो, जिसे चालीस वर्ष का होने तक अपनी पत्नी रिबका से मिलने के लिए, फिर और बीस वर्ष उनके पुत्रों, याकूब (यूसुफ़ का पिता) और एसाव (यूसुफ़ का ताऊ), के जन्म के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी। अवश्य ही उसने स्मरण किया होगा कि, इससे पहले कि वह कनान में अपने घर को लौट सका, याकूब को कठिन परिस्थितियों में हारान में बीस वर्ष तक अपनी पत्नियों और बच्चों, तथा मवेशियों एवं गल्लों के लिए परिश्रम करना पड़ा था।

यदि यूसुफ़ ने अपने पूर्वजों द्वारा लंबे समय तक झेली गई कठिनाइयों और संघर्षों के बारे में मनन किया होगा, तो उन विचारों ने उसे आश्वस्त किया होगा कि भविष्य को लेकर उसे हताश नहीं होना चाहिए। वह तो जानता था कि परमेश्वर ने उसे पिलानेहारे और खिलानहारे के स्वप्न का सही अर्थ बताने के योग्य किया था। प्रकट था कि परमेश्वर के पास उसके जीवन के लिए योजना थी, यद्यपि वह यह नहीं जानता था कि वह क्या हो सकती है या कब वास्तविकता बन जाए।

उपसंहार। परमेश्वर ने सदा ही अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति लोगों के विश्वास को परखा है, उसके पश्चात ही अधिक उत्तरदायित्व के स्थान उन्हें सौंपे हैं। हबक्कूक के शब्द यहाँ उचित हैं: "यदि वह धीमा लगे, तो उसकी प्रतीक्षा करो; वह अवश्य ही आएगा; उसमें विलंब नहीं होगा" (हबक्कूक 2:3; ESV)। परमेश्वर घड़ियों तथा कैलंडरों से बंधा नहीं है, न ही वह मनुष्यों के द्वारा बनाई गई किसी समय सारिणी का पालन करता है। परमेश्वर के लोगों ने अकसर विचार किया है, संभवतः जैसा कि यूसुफ़ ने भी किया, "परमेश्वर कहाँ है? वह क्या कर रहा है? वह क्यों इतना समय ले रहा है?" विश्वासियों को उस बात पर भरोसा रखना चाहिए जो प्रभु ने यशायाह 55:8 में प्रकट की है: "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।" उसने आगे कहा, "क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है" (यशा. 55:9)।

आरंभिक मसीहियों ने इन धारणाओं को थामा और कठिन परिस्थितियों में भी अपने विश्वास को प्रदर्शित किया। यद्यपि उन्हें आशा थी कि यीशु बहुत शीघ्र वापस आ जाएंगे, उन्हें प्रतीक्षा करने से कोई घबराहट नहीं थी (1 थिस्स. 4; 5; 2 थिस्स. 2:1-3)। पिन्तेकुस्त के दिन के कुछ ही समय के पश्चात पतरस और यूहन्ना को पकड़ कर बन्दीगृह में डाल दिया गया, और धमकाया गया कि यदि वे यीशु के मसीहा (ख्रिस्तुस) होने का प्रचार करना और उसके नाम से आश्चर्यकर्म

करना बन्द नहीं करेंगे तो कठोर दण्ड पाएंगे (प्रेरितों 4:5-22)। उन्होंने निर्भीक होकर उत्तर दिया, "यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें" (प्रेरितों 4:20)। बाद में यहूदियों के अगुवों ने चेलों को फिर से पकड़ा, और उन्हें महासभा (सन्हेड्रिन) के सामने लेकर आए। महायाजक ने धमकाने वाले भाव से बात की और उन्हें स्मरण कराया कि उनको यीशु के नाम से बोलने को मना कर दिया गया है। एक बार फिर उन्होंने पीछे हटने से मना किया। पतरस तथा अन्य प्रेरितों ने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरितों 5:29)। वे यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान होने का, तथा उसके परमेश्वर के सिंहासन तक उठा लिए जाने का प्रचार करते रहे। वे इन सब बातों के प्रत्यक्षदर्शी गवाह होने का भी दावा करते रहे।

इसके साथ ही, उन्होंने यह भी निश्चयपूर्वक कहा कि परमेश्वर ने यीशु को दोनों, "प्रभु और उद्धारकर्ता" ठहराया है, तथा जो उसके आज्ञाकारी रहते हैं वह उन्हें "पापों की क्षमा" प्रदान करता है (प्रेरितों 5:30-32)। मसीह के बारे में उनके प्रचार करते रहने से यहूदी अगुवे बहुत क्रोधित हुए, और यीशु के चेलों के लिए फांसी को उपयुक्त दण्ड मानने लगे (प्रेरितों 5:33)। गमलिएल की सलाह के कारण, उनके लिए इससे कम दण्ड, कोड़े लगवाए जाने, का निर्णय लिया गया; परन्तु यीशु के अनुयायियों को कठोरता से चेतावनी दी की अब और उसके बारे में न बोलें (प्रेरितों 5:34-40)। परन्तु फिर भी, प्रेरितों ने "यीशु ही मसीह है का प्रचार करने" को जारी रखा। इस निर्णय के कारण, बन्दीगृह में डाले जाने, और पीटे जाने (प्रेरितों 5:41, 42; 6:8-15), तथा शहीद होने (प्रेरितों 7:1-8:3) के साथ उन पर सताव बना रहा; फिर भी प्रेरित और अन्य आरंभिक मसीही, उन कठिनाइयों तथा सताव के बावजूद जो उन्हें सहना पड़ा, अपने विश्वास की गवाही देने में दृढ़ रहे।

समाप्ति नोट्स

[1]के. ऐ. किचिन, "कपबियर्र," में *द न्यू बाइबल डिक्शनरी*, एड. जे. डी. डगल्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईड्स्मैन पबलिशिंग कम्पनी, 1962), 283. [2]ब्रूस के. वॉल्टके, *जेनिसिस: ए कॉमेन्ट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोन्डरवैन पबलिशर्स, 2001), 525. [3]विशेषज्ञों में मतभेद है कि यह हवाला पोतीपर (39:1) के लिए है या उसके किसी उत्तराधिकारी के लिए। यद्यपि हम निश्चित तो नहीं हो सकते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि यह यूसुफ़ के पहले स्वामी के लिए ही है। (जॉन टी. विलिस, *जेनिसिस*, द लिविंग वर्ड कॉमेन्ट्री [ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पबलिशिंग कम्पनी, 1979], 403.) [4]हेल्मर रिंग्ग्रेन, "יָעַף," में *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, ट्रान्स. डेविड ई. ग्रीन, एड. जी. योहन्नेस बौट्रवेक एन्ड हेल्मर रिंग्ग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईड्र्समैन पबलिशिंग कम्पनी, 1980), 4:111. [5]विक्टर पी. हैमिल्टन, "פָּתַר," *TWOT* में, 2:744-45. [6]जौन ई. हार्टले, *जेनिसिस*, द न्यू इन्टरनैशनल बिबलिकल कॉमेन्ट्री (पीबॉडी, मास्स.: हेन्ड्रिकसन पबलिशर्स, 2000), 324. [7]जोज़फ वेर्गोंट, *Joseph en Égypte: Genèse Chap. 37-50, à la Lumière des Études Égyptologiques Récentes* (लोउवेन: पबलिकेशन्स यूनिवर्सिटाएर्स, 1959), 37. वेर्गोंट ने एडोल्फ एर्मन तथा हर्मन ग्रापोव के मिस्री

शब्दकोष से उद्धृत किया *Wörterbuch der aegyptischen Sprache*, 6 (लीप्ज़िग: हिनरिक्स, 1929)। [8]देखें रौनल्ड एफ. यंगबल्ड, "תָּלָה," *TWOT* में, 2:970-71. [9]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनिसिस 11:27-50:26*, द न्यूअमेरिकन कॉमेन्ट्री, वोल. 1बी (नैशविले: ब्रॉडमैन & होलमैन पबलिशर्स, 2005), 751 में दी गई चर्चा देखें। [10]राजा शाऊल (और उसके तीन बेटों) के मारे जाने के पश्चात, फिलिस्तियों ने "उसका सिर काटकर" और "उसके शरीर को बेथशान की शहरपनाह में जड़ दिया" (1 शमूएल 31:8-10)। इस घटना का एक और वृतांत उनका उल्लेख करता है जिन्हें बेथशान में "फाँसी" (תָּלָה, *थालह)* दी गई (2 शमूएल 21:13)।

[11]विलिस, 405. [12]देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हीब्रू एण्ड इंग्लिश लेक्सिकौन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लैरेन्डॉन प्रेस, 1962), 1059. देखें 26:30; 29:22; न्यायियों 14:12, 17; ऐस्तेर 1:3, 5, 7; 2:18. [13]उसके जीवन के वृतांत के भिन्न बिन्दुओं पर यूसुफ़ की आयु का अनुमान दो हवालों को आधार बनाकर लगाया जा सकता है। वह सत्रह वर्ष का था जब याकूब ने उसे वह विशिष्ट अंगरखा दिया था (37:2), और वह तीस का था जब फ़िरौन ने उसे मिस्र का प्रधानमंत्री नियुक्त किया (41:46)। हम यह भी जानते हैं कि यूसुफ़ द्वारा अपने संगी बन्दियों के स्वप्नों का अर्थ बताने (अध्याय 40) के दो वर्ष बाद ही फ़िरौन ने अपना स्वप्न देखा (41:1)।